॥ श्रीमद्भगवद्गीता शुद्ध उच्चारण मार्गदर्शिका - स्तर 3 ॥

विशिष्ट स्वर और उनकी मात्रायें -

- 'ऋ' और 'ॠ' ये संस्कृत के ऐसे स्वर है जो उच्चारण के समय व्यञ्जन जैसे प्रतीत होते है किन्तु वास्तव में व्यञ्जन होते नहीं। इनकी मात्रायें ृ और ॄ हैं। इनमें प्रथम ह्रस्व और द्वितीय दीर्घ स्वर है।

वर्णों के संयोग में रेफ की स्थानानुसार मात्रायें -

- 'र्' वर्ण का किसी भी वर्ण के साथ दो प्रकार से संयोग होता है। संयोग में यदि वह प्रथम है तो वह अक्षर के ऊपर ◌र्‌ इस तरह से लिखा जाता है जैसे – कर्म। एवमेव यदि द्वितीय है तो अक्षर के नीचे ◌्र इस तरह से लिखा जाता है जैसे - क्रम।

संयुक्त वर्णों की लिखने की एवं उन्हें पढ़ने की रीति -

संयुक्त वर्णों को देवनागरी में दो प्रकार से लिखा जाता है।

- पहली पद्धति में 'एक के नीचे दूसरा' इस तरह से प्रथम व्यञ्जन को सबसे ऊपर और फिर क्रमशः नीचे की ओर व्यञ्जन को जोड़ा जाता है। उदा. – उद्भव
- दूसरी पद्धति में व्यञ्जनों को क्रमों में जैसे हैं वैसे ही लिखा जाता है। इन दोनों पद्धतियों में जो वर्ण प्रथम है उसका प्रथम तथा क्रमशः शेष वर्णों का उच्चारण करना होता है। उदा. – उद्‌भव

गीता परिवार साहित्य का उपयोग किसी अन्य स्थान पर करने हेतु पूर्वानुमति आवश्यक है।

सन्धि-नियम

दो वर्णों के एकत्र आने पर सन्धि होती है। यदि एकत्र आने वाले वर्ण स्वर हैं तो वह सन्धि स्वरसन्धि, व्यञ्जन हैं तो व्यञ्जन सन्धि, अनुस्वार है तो अनुस्वार सन्धि और विसर्ग है तो विसर्गसन्धि होती है। सन्धि होने पर एकत्र आने वाले वर्णों में से किसी एक या कई बार दोनों वर्णों पर परिवर्तन हो जाता है। वह परिवर्तन क्या हैं और कैसे होते हैं ऐसे स्वर संधि के नियमों को विस्तार से जानेंगे।

स्वर या अच् सन्धि –

स्वर सन्धि दो स्वरों में होती है। इनमें स्वर का परिवर्तन होने के कारण इन्हें स्वर-सन्धि कहते हैं। इनके कई प्रकार हैं -

1. दीर्घ सन्धि – अक: सवर्णे दीर्घ:

दो सजातीय स्वर एकत्र आने पर उन दोनों के स्थान पर उनका सजातीय **दीर्घ स्वर** आ जाता है।

एकत्र आने वाले दो स्वर		दोनों के स्थान पर होने वाले एक दीर्घादेश	उदाहरण
अ/आ	अ/आ	आ	भय्+**अ**+**अ**भये= भ**या**भये (18/30)
इ/ई	इ/ई	ई	भ्रमत्+**इ**+**इ**व = भ्रम**ती**व (1/30)
उ/ऊ	उ/ऊ	ऊ	तेष्+**उ**+**उ**पजायते = ते**षू**पजायते (2/62)
ऋ/ॠ	ऋ/ऋ	ॠ	पित्+**ऋ**+**ऋ**णम् = पि**तॄ**णम् गीता में इसका उदाहरण नही मिलता है।

2. गुण सन्धि – आद्गुण:

सन्धि होने वाले वर्णों में यदि प्रथम वर्ण **'अ'** या **'आ'** है और द्वितीय वर्ण **'इ'**, **'उ'**, **'ऋ'** या **'ऌ'** ह्रस्व अथवा दीर्घ में से कोई एक होता है तो दोनों के स्थान पर क्रमशः **'ए'**, **'ओ'**, **'अर्'** और **'अल्'** आते हैं।

एकत्र आने वाले दो वर्ण		दोनों के स्थान पर होने वाला गुणादेश	उदाहरण
अ/आ	इ/ई	ए	विगत्+**अ**+**इ**च्छा = विग**ते**च्छा (5/28)
	उ/ऊ	ओ	पुर्+**आ**+**उ**वाच = पु**रो**वाच (3/10)
	ऋ/ॠ	अर्	मह्+**आ**+**ऋ**षीणाम् = म**हर्षी**णाम् (10/2)
	ऌ	अल्	तव्+**अ**+**ऌ**कार: = त**वल्**कार: गीता में इसका उदाहरण नही मिलता है।

गीता परिवार साहित्य का उपयोग किसी अन्य स्थान पर करने हेतु पूर्वानुमति आवश्यक है।

3. यण् सन्धि – इको यणचि

सन्धि होने वाले वर्णों में यदि प्रथम वर्ण **'इ'**, **'उ'**, **'ऋ'** या **'ऌ'** ह्रस्व या दीर्घ और द्वितीय वर्ण कोई भी विजातीय स्वर हो तो प्रथम स्वरों के स्थान पर क्रमशः **'य्'**, **'व्'**, **'र्'** और **'ल्'** ये व्यञ्जन आदेश होकर द्वितीय स्वर के साथ मिल जाते हैं।

एकत्र आने वालों में प्रथम वर्ण	एकत्र आने वालों मे द्वितीय वर्ण	एकत्र आने पर प्रथम के स्थान पर हुवा यणादेश	उदाहरण
इ/ई	अन्य कोई भी स्वर	य्	कर्मण्+**इ**+**ए**व = कर्म**ण्ये**व (2/47)
उ/ऊ		व्	त्+**उ**+**ए**वाहम् = **त्वे**वाहम् (2/12)
ऋ/ॠ		र्	जाग्+**ऋ**+**अ**ति = जाग्रति (2/69)
ऌ		ल्	**ऌ**+**आ**कृतिः = **ला**कृतिः गीता में इसका उदाहरण नही मिलता है।

4. वृद्धि सन्धि – वृद्धिरादैच्

सन्धि होने वाले वर्णों मे यदि प्रथम वर्ण **'अ'** या **'आ'** हो और द्वितीय वर्ण **'ए'** या **'ऐ'** अथवा **'ओ'** या **'औ'** हो तो दोनों के स्थान पर क्रमशः **'ऐ'** और **'औ'** हो जाते हैं।

एकत्र आने वाले वर्णों मे प्रथम वर्ण	एकत्र आने वाले वर्णों मे द्वितीय वर्ण	दोनों वर्णों के स्थान पर होने वाला वृद्धि-आदेश	उदाहरण
अ/आ	ए/ऐ	ऐ	सहस्+**आ**+**ए**व = सह**सै**व(1/13)
	ओ/औ	औ	च् +**अ**+**ओ**षधीः = **चौ**षधीः (15/13)

5. अयादि सन्धि – एचोऽयवायावः

सन्धि होने वाले वर्णों मे यदि प्रथम वर्ण **'ए'**, **'ऐ'**, **'ओ'** अथवा **'औ'** हो और द्वितीय वर्ण **'कोई भी स्वर'** हो तो प्रथम वर्णों के स्थानों पर क्रमशः **'अय्'**, **'आय्'**, **'अव्'** और **'आव्'** आदेश होकर द्वितीय स्वर के साथ मिल जाते हैं।

एकत्र आने वाले वर्णों मे प्रथम वर्ण	एकत्र आने वाले वर्णों मे द्वितीय वर्ण	प्रथम वर्ण के स्थान पर होने वाला अयादि-आदेश	उदाहरण
ए	कोई भी स्वर	अय्	राजर्ष्+**ए**+**अ**ः = राज**र्षय**ः (4/2)
ऐ		आय्	न्+**ऐ**+**अ**का: = **नाय**का: (1/7)
ओ		अव्	मन्+**ओ**+**ए** = म**नवे** (4/1)
औ		आव्	द्व्+**औ**+ इमौ =**द्वावि**मौ (15/16)

गीता परिवार साहित्य का उपयोग किसी अन्य स्थान पर करने हेतु पूर्वानुमति आवश्यक है।

6. पूर्वरूप सन्धि – एङः पदान्तादति

सन्धि होने वाले वर्णों में यदि प्रथम वर्ण **'ए'** या **'ओ'** हो और द्वितीय वर्ण **'अ'** हो तो दोनों के स्थान पर क्रमशः **'ए'** और **'ओ'** हो जाते हैं। लुप्त हुए 'अ' का ज्ञान कराने के लिए ऽ (अवग्रह) का चिह्न लगता है।

एकत्र आने वाले वर्णों मे प्रथम वर्ण	एकत्र आने वाले वर्णों मे द्वितीय वर्ण	दोनों वर्णों के स्थान पर होने वाला पूर्वरूप-आदेश	उदाहरण
ए	अ	एऽ	त्+**ए**+**अ**भिहिता = ते**ऽ**भिहिता (2/39)
ओ	अ	ओऽ	दृष्ट्+**ओ**+**अ**न्तः = दृष्टो**ऽ**न्तः (2/16)

सामान्य शब्दावली

- **वर्णमाला –**

  स्वर - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ

  व्यञ्जन -

  - **कण्ठ्य** - क् ख् ग् घ् ङ्
  - **तालव्य** - च् छ् ज् झ् ञ्
  - **मूर्धन्य** - ट् ठ् ड् ढ् ण्
  - **दन्त्य** - त् थ् द् ध् न्
  - **ओष्ठ्य** - प् फ् ब् भ् म्

- **अन्तःस्थ -** जिनका उच्चारण जीभ, तालु, दांत और होठों के परस्पर सटने की वजह से होता है। उन्हें अन्तःस्थ वर्ण कहा जाता है। य् , व् , र् , ल् अन्तःस्थ वर्ण हैं ।
- **ऊष्म -** इनके उच्चारण में मुख से ऊष्मा का निकास होता है, अतः इन्हें ऊष्म वर्ण कहा जाता है । श् , ष् , स् , ह् ऊष्म वर्ण हैं ।
- **मृदु व्यंजन** – पांच व्यंजन वर्गों के तृतीय, चतुर्थ, पंचम (ग्, घ्, ज्, झ्, ड्, ढ्, द्, ध्, ब्, भ्) वर्ण, अन्तःस्थ (य्, र्, ल्, व्) वर्ण एवं ह् वर्ण यह मृदु व्यंजन कहलाते हैं ।
- **कठोर व्यंजन –** पांच व्यंजन वर्गों के प्रथम, द्वितीय वर्ण (क्, ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्, प्, फ्) एवं श्, ष्, स् यह कठोर व्यंजन कहलाते हैं ।
- **अल्पप्राण व्यंजन-** जिन व्यंजनों के उच्चारण में श्वास-वायु कम मात्रा में बाहर निकलती है, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं। क,ग,ङ,च,ज,ञ,ट,ड,ण,त,द,न,प,ब,म,य,र,व्,ल्
- **महाप्राण व्यंजन -** ऐसे व्यंजन जिनको बोलने में अधिक प्रयत्न करना पड़ता है और बोलते समय मुख से अधिक वायु निकलती है। उन्हें महाप्राण व्यंजन कहते हैं। ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, श, ष, स, ह
- **जिह्वामूलीय -** ' क ' और ' ख ' से पहले विद्यमान अर्ध – विसर्ग जिह्वामूलीय (ख×) कहलाता है। जिसका उच्चारण ख् की तरह किया जता है |
- **उपध्मानीय -** ' प ' और ' फ ' से पहले विद्यमान अर्ध – विसर्ग उपध्मानीय (फ×) कहलाता है। जिसका उच्चारण फ् की तरह किया जाता है |

गीता परिवार साहित्य का उपयोग किसी अन्य स्थान पर करने हेतु पूर्वानुमति आवश्यक है।

॥ इति ॥

गीता परिवार साहित्य का उपयोग किसी अन्य स्थान पर करने हेतु पूर्वानुमति आवश्यक है।